LOK SABHA

Tuesday, August 8, 1978/Sravana 17, 1900 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

OBITUARY REFERENCE

MR SPEAKER I have to inform the House of the sad demise of Shri Ram Rattan Gupta who passed away at Kanpur on August 3, 1978 at the age of 72

Shri Ram Rattan Gupta was a Member of the Third Lok Sabha during the years 1962—64 and 1966-67, representing Gonda constituency of Uttar Pradesh Eearlier he had been a Member of the Central Legislative Assembly in 1943

A leading businessman and an industrialist he made a substantial contribution in the field of industries in the country A well-known figure in Kanpur, he served as its Mayor for two terms He was associated with several charitable and educational institutions in Uttar Pradesh A man of versatile ability he took keen interest in a variety of subjects like commerce, industry, finance, banking, defence and railways He was also the author of two books entitled "World before Second World War" and "Time for Decision"

We deeply mourn the loss of this friend and I am sure, the House will

join me in conveying our condolences to the bereaved family

The House may stand in silence for a short while to express its sorrow

The members then stood in silence for a short while

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Closure of Hindustan Petroleum Refinery in July, 1978

*325 SHRI D D DESAI Will the Minister of PETROLEUM CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state

(a) whether the Hindustan Petroleum Refinery at Bombay had been closed down for a brief period during July, 1978

(b) if so, whether this has caused shortage of petroleum products, and

(c) whether any crash plant to import kerosene and HSD has been undertaken?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI H N BAHUGUNA) (a) Yes, Sir The Refinery has been closed down from 8th July, 1978 for emergent repairs due to leakage in the crude distillation unit and the refinery is expected to be recommissioned round middle of August, 1978

(b) and (c) Alternative plans have been implemented to ensure availability of products to meet the demands and maintain the supply line However, in respect of cooking gas, there has been some delay in normal supplies to consumers in Bombay fed areas Arrangements have been made by Government to import additional

quantities of kerosene and High Speed Diesel oil over and above what was planned earlier.

SHRI D. D. DESAI: The closure of this refinery has resulted in acute shortage of HSD, gas and kerosene. On the other hand, Bombay High gas is being flared and thus wasted. Would he be in a position to give details as to why there has been some difficulty in initiating steps to take the Bombay High Gas and Oil to the shore in Gujarat and Maharashtra which would have eliminated the present problem of shortages of these products and urgent import?

SHRI H. N. BAHUGUNA: Mr. Desai has tried to bring another question into this. Anyway, I welcome the suggestion. The point is, even if the Government wanted to do it in a hurry, it would take time. This Government came to power towards the end of March, 1977. Mr. Desai is an eminent person and he would agree that to bring the gas to the shore, then put up a gas fractionation plant to convert it into LPG etc. would take anyhere between 3 to 3-1/2 years. That gas fractionation plant is now being thought of and Engineers India Ltd. have been asked to go into the whole exercise. The moment they give their advice we shall proceed in the direction in which he wants us to proceed.

SHRI D. D. DESAI: My problem was limited to shortage in the country as may be arising on account of the closure of one refinery or another. This particular case refers to a refinery of Hindustan Petroleum. The Minister in his reply said, it will take 3 to 5 years. My request to the Minister is to examine the facts and see it for himself—Rs. 81 crores or 144 Km. to Diu *versus* 230 KM to Bombay; over concentration at Trombay; the countryside as well as the Northern India market presently straved of these products for which the Minister had to import only in January as much as 3 lakh tonnes of kerosene, *versus* the very short time it had taken to lay the pipeline from Bombay High to Trombay, *versus* the shorter, nearly half, the distance to Diu and ....

MR. SPEAKER: You are giving a lot of suggestions. You are not putting your question.

SHRI D. D. DESAI: I have to get the dates on which he can start and the date on which he can complete. Both of them should be known to the public, because the public is facing the present situation of shortages of gas, kerosene and HSD. May I know what is his time-bound programme so far as this is concerned?

SHRI H. N. BAHUGUNA: Actually the pipeline to Gujrat cannot arise out of this question. There is a separate question on that also. I want to assure the House and through the House the people of Gujrat, Northern India and the whole of India that the pipeline or whatever is the quickest possible method available to us will be made use of in bringing the off-shore gas to the shore and use them. The land fall has to be either Gujarat or Maharashtra or both We have decided to take the off-shore gas and use it in Gujarat as well as Maharashtra. Therefore, the gas has to go Gujarat also.

SHRI D. D. DESAI: After all, he has worked out the details. He is not making them public. He has already enough details.

MR. SPEAKER: Probably for good reasons he is not publishing it!

चौधरी बलबीर सिंह : मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि जो लीकेज हुआ है वह क्या इस वजह से हुआ है कि उनको जब बताया गया तो उसमें कोई कमी रह गई, या अब कोई उसमें किसी ने गड़बड़ की ? या कौन जिम्मेदार है उस लीकेज के लिए, इस बारे में मंत्री जी कुछ बतायेंगे और जांच कर के कुछ ऐक्शन लेंगे ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा : मान्यवर, जो लीकेज हुई है इसके लिए हमने ऐक्सपर्ट्स से पूछा, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

वालों से पूछा, ऐटमिक रिसर्च के मैटल कोरोजन विभाग से पूछा जो उसको डील करते है, यानी धातु में जो थकन आ जाती है या फटन आ जाती है। इसके बारे में जानकार लोगो से पूछा। तो न तो प्लेट में, जैसा बताते हैं जो रखी गई हैं, क्योंकि उसका कुछ इम्तहान तो हो गया है, निकाल ली गई है और यह भी लोग कहते हैं कि बड़ी जल्दी पकड़ में आ गई, अगर 4 6 घण्टे की देरी होती और पकड़ में न आती तो अधिक नुकसान होने वाला था इसलिए कोई कमी उसमें किसी बनाने वाले की नहीं है। यह तो कुदरती है उस प्लेट से अब तक की जो जानकारी है। लेकिन जब यह पूरी सारी चीज बाहर निकल कर आ जाएगी तब कारण मालूम हो जायगा कि क्या कारण था जिसके कारण उसमें यह फटन आई।

समस्तीपुर-दरभगा मीटर गेज लाइन को ब्राड गेज लाइन में बदला जाना

*326 श्री सुरेन्द्र झा सुमन क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) क्या सरकार को स्थानीय संगठनो और रेल प्रयोक्ताओं से समस्तीपुर-दरभगा मीटर गेज लाइन का ब्राड गेज लाइन में बदलने के बारे में कोई ज्ञापन प्राप्त हुआ है,

(ख) क्या इस सम्बन्ध में प्रस्ताव को पहिले ही अनुमोदन दे दिया गया था और भूतपूर्व रेल मंत्रियों ने इसका तत्काल निर्माण कराने का आश्वासन दिया था

(ग) क्या सरकार ने इस बारे में सर्वेक्षण कार्य पूरा कर लिया है,

(घ) क्या यह सच है कि गत पांच वर्षों से दरभगा-समस्तीपुर लाइन का निर्माण करने के लिए बजट में सांकेतिक प्रावधान की व्यवस्था की जाती है

(ङ) क्या सरकार का इस कार्य को शीघ्र आरम्भ करने हेतु आगे व्यवस्था करने का विचार है और

(च) यदि हां तो उसका ब्यौरा क्या है और यदि नहीं तो उसके क्या कारण हैं ?

रेल मंत्री श्री० मधु दंडवते (क) से (च) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) जी हां।

(ख) से (च) समस्तीपुर-दरभगा मीटर लाइन के आमान परिवर्तन का काम 1974-75 के बजट में शामिल किया गया था और यह एक अनुमोदित कार्य है। इस मीटर लाइन को बड़ी लाइन में बदलने के सम्बन्ध में अन्तिम स्थान निर्धारण इंजीनियरी सर्वेक्षण-एवं-यातायात मूल्यांकन रिपोर्ट अक्टूबर, 1977 में प्राप्त हो गई थी। इस मूल्यांकन के अनुसार इस परियोजना पर लगभग 8 73 करोड़ रुपए की लागत आयेगी। संसाधनों की अत्यन्त तंगी के कारण चालू वित्तीय वर्ष में, इसके लिए केवल सांकेतिक व्यवस्था की गई है। वर्तमान कार्ययोजन के अनुसार आमान परिवर्तन की 14 परियोजनाओं में से कुछ परियोजनाओं पर ही जो इस समय चल रही हैं प्रयास केन्द्रित करने और किसी अन्य परियोजना को जो अभी शुरू भी नहीं हुई है हाथों में लेने से पहले चालू परियोजनाओं का कार्य पूरी तरह से समाप्त करने का विचार है। इस नीति के अन्तर्गत समस्तीपुर-दरभगा मीटर लाइन के बदलाव का काम तब हाथ में लिया जाएगा जब पहले से चल रहे काम पूरे हो जायेंगे।

श्री सुरेन्द्र झा सुमन. श्रीमन, मैं आपके माध्यम से रेल मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि मंत्री महोदय के वक्तव्य के अनुसार जब यह कार्य अनुमोदित है और 1974-75 से ही गत 5 साल से बजट में यह शामिल होता आया है और सर्वेक्षण का कार्य भी दो साल पहले, यानी 1977 में पूरा हो चुका है तो इसे प्राथमिकता देने में क्यों ढिलाई बरती जा रही है जबकि इसकी लागत से भी उत्तरोत्तर बढ़ती होती जा रही है ? 1974-75 में सिर्फ 5 करोड़ रु० की लागत आंकी गई थी पर इस समय लगभग पौने नौ करोड़ रु० की लागत आंकी गई है। इसलिए विकास की दृष्टि से पिछड़े बिहार राज्य में जो सर्वाधिक पिछड़े 11 जिले हैं उनमें दरभगा, समस्तीपुर, मधुबनी और सीतामढ़ी आते हैं इनके विकास को ध्यान में रखते हुए क्या रेल मंत्री महोदय इस लाइन परिवर्तन को शीघ्रातिशीघ्र हाथ में लेने का आश्वासन देंगे ?

श्री० मधु दंडवते जैसा मैंने पहले ही सदन में बताया कि मंत्रालय की सर्वसाधारण नीति यह रहेगी कि जो परियोजनायें हम लोगों के हाथ में हैं जिनका सर्वेक्षण हुआ है उनकी तरफ ज्यादा ध्यान दें उनको पूरा करें। इसलिए बागबकी समस्तीपुर जो कनबर्जन की स्कीम है इस प्रोजेक्ट को हमने प्राथमिकता दी है और मैं समझता हूं कि यह काम पूरा होने से काफी फायदा इन क्षेत्रों को हो जायगा।

दूसरी दिक्कत यह है कि जिस लाइन के बारे में माननीय सदस्य ने जिक्र किया है बाढ़ की वजह से वहां पुल डालने का काम बड़े पैमाने पर करना होगा और उसमें खर्चा करने के बजाय जो परियोजनायें हम लोगों के हाथ में आज हैं जिनको